॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।

आर्त्यै॑ परिविविदा॒नम्। अरा᳚ध्यै दिधिषू॒पतिम्᳚। प॒वित्रा॑य भि॒षज᳚म्। प्र॒ज्ञाना॑य नक्षत्रद॒र्॒शम्। निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒रीम्। बला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रुध᳚म्॥४॥

न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका᳚भ्यो॒ नैषा॑दम्। पु॒रु॒ष॒व्या॒घ्राय॑ दु॒र्मद᳚म्। प्र॒युद्भ्य॒ उन्म॑त्तम्। ग॒न्ध॒र्वा॒प्स॒राभ्यो॒ व्रात्य᳚म्। स॒र्प॒दे॒व॒ज॒नेभ्योऽप्र॑तिपदम्। अवे᳚भ्यः कि॒तवम्। इ॒र्यता॑या॒ अकि॑तवम्। पि॒शा॒चेभ्यो॑ बिदलका॒रम्। या॒तु॒धाने᳚भ्यः कण्टकका॒रम्॥५॥

उ॒थ्सा॒देभ्यः॑ कु॒ब्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒र्भ्यः॑ स्रा॒मम्। स्वप्ना॑या॒न्धम्। अध॑र्माय बधि॒रम्। सं॒ज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्। प्र॒का॒मोद्या॑योप॒सद᳚म्। आ॒शि॒क्षायै᳚ प्र॒श्निन᳚म्। उ॒प॒शि॒क्षाया॑ अभिप्र॒श्निन᳚म्। म॒र्यादा॑यै प्रश्नविवा॒कम्॥६॥

ऋत्यै᳚ स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय॒ पिशु॑नम्। विवि॑त्त्यै क्ष॒त्तार᳚म्। औप॑द्रष्टाय सङ्ग्रही॒तार᳚म्। बला॑यानुच॒रम्। भू॒म्ने प॑रिष्कु॒न्दम्। प्रि॒याय॑ प्रियवा॒दिन᳚म्। अरि॑ष्ट्या अश्वसा॒दम्। मेधा॑य वासः पल्पू॒लीम्। प्र॒का॒माय॑ रजयि॒त्रीम्॥७॥

भायै॑ दार्वा॑हा॒रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य

पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒क्तार᳚म्। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्। दे॒व॒लो॒काय॑ पेशि॒तार᳚म्। म॒नु॒ष्य॒लो॒काय॑ प्रकरि॒तार᳚म्। सर्वे᳚भ्यो लो॒केभ्य॑ उपसे॒क्तार᳚म्। अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तार᳚म्। सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दुघ᳚म्। वर्॒षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टार᳚म्॥८॥

अर्मे᳚भ्यो ह॒स्ति॒पम्। ज॒वाया᳚श्व॒पम्। पुष्ट्यै॑ गोपा॒लम्। तेज॑सेऽजपा॒लम्। वी॒र्या॑याविपा॒लम्। इरा॑यै की॒नाश᳚म्। की॒लाला॑य सुराका॒रम्। भ॒द्राय॑ गृह॒पम्। श्रेय॑से वित्त॒धम्। अध्य॑क्षायानुक्ष॒त्तार᳚म्॥९॥

म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पम्। क्रोधा॑य निस॒रम्। शोका॑याभिस॒रम्। उ॒त्कू॒ल॒वि॒कू॒लाभ्यां᳚ त्रि॒स्थिन᳚म्। योगा॑य यो॒क्तार᳚म्। क्षेमा॑य विमो॒क्तार᳚म्। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शीला॑याञ्जनीका॒रम्। निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्। य॒माया॒सूम्॥१०॥

य॒म्यै॑ यम॒सूम्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोकाम्। सं॒व॒थ्स॒राय॑ पर्या॒रिणी᳚म्। प॒रि॒व॒थ्स॒राया॑विजाताम्। इ॒दा॒व॒थ्स॒राया॑प॒स्कद्व॑रीम्। इ॒द्व॒थ्स॒राया॒तीत्व॑रीम्। व॒थ्स॒राय॒ विज॑र्जराम्। सं॒व॒थ्स॒राय॒ पलि॑क्नीम्। वना॑य वन॒पम्। अ॒न्यतो॑रण्याय

दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्वलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्णम्॥१३॥

बीभत्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣳश्चलूमा लभते। वीणावादं गणकं गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मं ग्रामण्यं

पाणिसङ्घ्वातं नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदर्शम्। द्वापराय बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निरृत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं मांसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽंसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वंशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्। अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानं व्यानमुदानं समानं तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्। अतिकृशमत्यंसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्ण-

मतिं॑लोमशम्। अतिं॑किरिट॒मतिं॑दन्तुरम्। अतिं॑मिर्मिर॒मतिं॑-मेमिषम्। आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्मं॑णे गी॒ताय॒ श्रमां॑य स॒न्धयें॑ न॒दीभ्यं॑ उथ्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अर्मे᳚भ्यो म॒न्यवें॑ य॒म्यैं॑ दशं॑दश॒ सरो᳚भ्यो॒ द्वादं॑श प्रति॒श्रुत्कां॑यै बीभ॒थ्सायै॒ दशं॑दश॒ हसां॑य स॒प्ताक्षं॑रा॒जाय॒ त्रयों॑दश॒ भूम्यै॒ दशं॑ वा॒चे षडथ॒ नवैका॒न्नविꣳ॑शतिः॥१९॥

ब्रह्मं॑णे य॒म्यैं॑ नवं॑दश॥१९॥

ब्रह्मं॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः॑ ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/